मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १५९ • अगस्त-२०२१

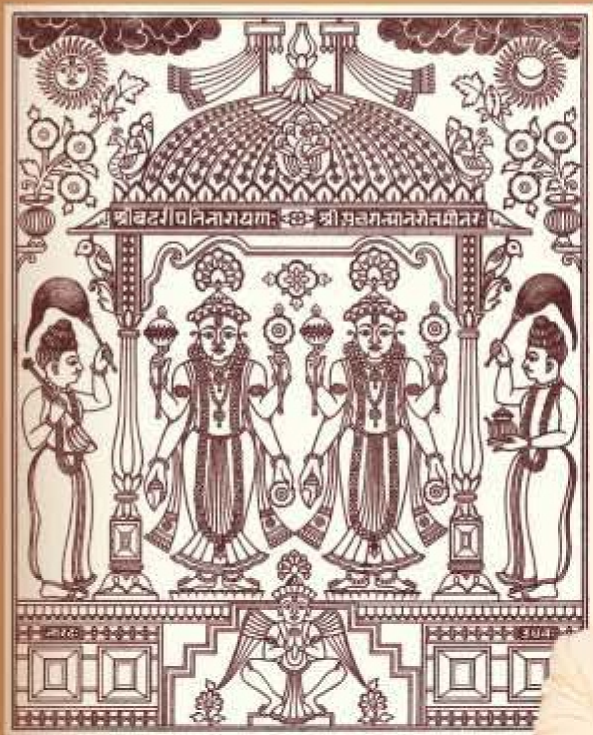

गुरुपूर्णिमा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में गुरुपूर्णिमा और प.पू. लालजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव मनाया गया । जिस में काफी समय के बाद अधिक हरिभक्तोंने भाग लिया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में एक साथ १९ संतो को भगवती दीक्षा देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री

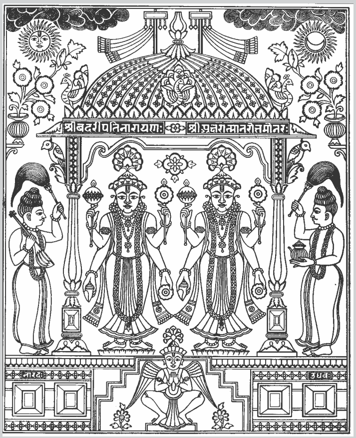

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १५ ● अंक : १६१ ● अगस्त-२०२१

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. रामकृष्ण गोविंद जय जय गोविंद ०६

०४. पर्व के साथ साथ ०८

०५. बालवा १०

०६. गुरुपूर्णिमा के अवसर पर श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृत वचन ११

०७. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १३

०८. भक्ति सुधा १४

०९. सत्संग समाचार १६

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

जब प्रकृति में चारो तरफ वातावरण आनंददायी होता है। उसी समय प्राणी मात्र के हदय में भी आनंद की लहर उठ जाती है। आनंद और उत्साह में किया गया कार्य अति सुखदायक होता है। ऐसे सुख के समय में परमेश्वर की प्राप्ति कर सके। ऐसे में शुभ कार्यो को जो करते है। इससे जीवात्मा मृत्यु के महाभंयकर कष्ट से अवश्य मुक्ति को प्राप्त होता है। प्रकृति में परिवर्तन प्रारम्भ होने से अपने ऋषि मुनियो ने हम लोगो के लिये दिव्य और अति शुभ अवसर दिये है। वह गुरुपूर्णिमा का दिव्य लाभ है। जिस में गुरु के पूजन-अर्चन करके उनके आज्ञानुसार अपने मोक्ष के मार्ग को प्रशस्तकर सकते है। जिसमें पवित्रता और भगवान की नवधा भक्ति जप, तप से अपने आराध्यदेव की आराधना करने का समय अथवा चातुर्मास जो श्रीहरि के आज्ञा-शिक्षापत्री में है। वृत्तियो से बाहर निकलकर भगवान के स्वरुप में स्थिर करके नियमो को धारण करे। सत्य स्वरुप ऐसे परमात्मा भगवान श्रीहरि और श्रीहरि के अपर स्वरुप ऐसे धर्मवंशी आचार्यश्री के आज्ञा से किया गया भजन, भक्ति सम्पूर्ण आध्यात्मिक शुभ सफलता प्राप्त होती है। आज्ञा और उपासना ही मुख्य आधार है। आध्यात्मिक मार्ग के बिना किये गये कार्य जैसे जप, तप, साधना ये सभी लौकिक फल अर्थात् सम्मान, धन प्रदान करता है। लेकिन मोक्ष की लेशमात्र बात नही आती है। यह मात्र जन्म-मरण और चौरासी योनि में भ्रमण करते है। इस लिये मुमुक्षु ऐसे भगवान भक्त सावधान होकर शास्त्रो की मर्यादा में रहकर मोक्ष प्राप्त कर लेना चाहिए। यही सभी के हित में है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

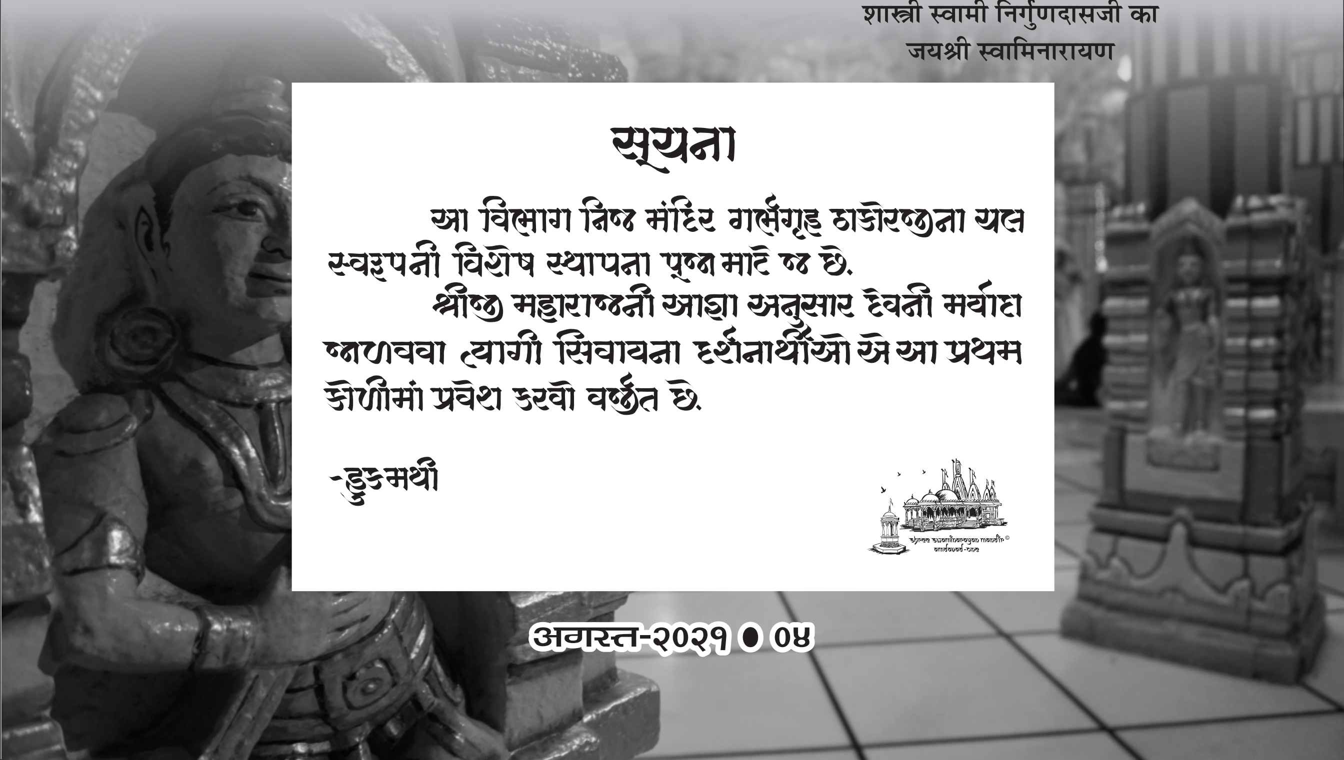

સૂચના

આ વિભાગ નિજ મંદિર ગર્ભગૃહ ઠાકોરજીના ચલ સ્વરૂપની વિશેષ સ્થાપના પૂજન માટે જ છે.

શ્રીજી મહારાજની આજ્ઞા અનુસાર દેવની મર્યાદા જાળવવા ત્યાગી સિવાયના દર્શનાર્થીઓ એ આ પ્રથમ કોળીમાં પ્રવેશ કરવો વર્જીત છે.

-હુકમથી

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (जुलाई-२०२१)

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मं १९ पार्षद संत को महादीक्षा अपने करकमलो द्वारा वेदोक्त विधि से पूर्ण की गई ।

२४ गुरुपूर्णिमा श्री नरनारायणदेव देश के हजारो संत-हरिभक्तो द्वारा धर्मवंशी गुरु का गुरु पूजा अर्चना धामधूम पूर्वक पूर्ण हुआ । सभी संत-हरिभक्तो को आशीर्वाद देकर सभी के उपर खुश हुए ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०२१)

२४ गुरुपूर्णिमा श्री नरनारायणदेव देश के हजारो संत-हरिभक्तो द्वारा धर्मवंशी गुरु का गुरु पूजा अर्चना धामधूम पूर्वक पूर्ण हुआ । सभी संत-हरिभक्तो को आशीर्वाद देकर सभी के उपर खुश हुए ।

रामकृष्ण गोविंद जय जय गोविंद

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने सम्प्रदाय के बडे शिखरबद्ध तथा हरिमंदिरो देश-विदेश में भी है। ये सभी मंदिर सुबह से लेकर रात्रि तक प्रतिदिन के दैनिक नियमो में कई एक समानता दिखाई देती है। उसमें प्रतिदिन गाये जाने वाली स्तुति-प्रार्थना-मंत्र-स्तोत्र आदि की परम्परा अन्य सम्प्रदाय से अलग अपने सम्प्रदाय में अलग दिखाई देता है।

उद्धव सम्प्रदाय के प्रवर्तक सद्‌गुरु श्री रामानंद स्वामी के समकालीन समय में सभी जगह पर अलग-अलग स्तुति प्रार्थना भक्त किया करते थे। जब से श्रीहरि सम्प्रदाय के धर्मधुरंधर बने तत्पश्चात समय समय पर सुधार करके एक आध्यात्मिक संरचना बना दिये। सभी नित्य-नियमो के पश्चात एक संध्या आरती के बाद ''रामकृष्ण गोविंद जय जय गोविंद'' की धुन पर समुह गीत करवाते थे। इसी परम्परा के कारण धार्मिक जगत में मुमुक्षु अपने सम्प्रदाय से बाहर निकलकर सर्व-धर्म समभावना रखते है। यह सर्व धर्म भावना को पैदा करने वाली धुन है। किसी अन्य सम्प्रदाय का व्यक्ति जब इस संध्या वंदन को सुनता है तो उसके उपर कितने सम्प्रदाय में प्रतिबंध था। उस समय में ऐसा साहसिक निर्णय श्रीजी महाराजने किया था। धार्मिक दुनिया में नया मोड कहे थे। जो एक सूत्र में रखने का प्रयास था। एक विस्फोटक प्रयास था। इस सम्प्रदाय में सभी त्यागी, गृही, भाई-बहन तथा सभी अनुयाइयो को ऐसे विशाल विचारधारा में एक मत में लाने के लिये श्रीहरि अपने पुरुषोत्तमपन का उपयोग अवश्य किये होगे। गाँव-गाँव नगर-नगर ''श्री रामकृष्ण गोविंद'' की धुन गाने लगे।

इस धुन की शुरुआत कहाँ पर कैसे हुई। यह बात ''श्रीहरिकृष्ण लीलामृत सागर'' के लेखक सद्‌गुरु स्वामी माधवदासजी जो पहले वटामण गाँव के निवासी थे। श्रीजी महाराज के साथ २६ वर्ष तक रहे थे। उन्होने ८० बार समैया का दर्शन किये। इन्हे महाराजने २० बार आलिंगन किये थे। १४ बार छाती पर चरणारविंद दिये थे। २५ बार रंगोत्सव खेले थे। ८३२ बार घोडे-हाथी पर सवार दर्शन किये थे। १६० गाँवो में साथ रहे थे। ३२५ बार श्रीहरि के अमृतवचन कानो-कान से सुने थे। ८३ बार हार पहनाये थे। ये वडताल विभाग में जन्म लिये। और वडताल मंदिर में आयु के अन्तिम समय तक सेवा दिये। ऐसे दास धारा के प्रथम संत सद्‌गुरु श्री माधवदासजी स्वामी लिखते है कि,

एकबार गढपुर में श्रीजी महाराज दादा खाचर के दरबार गढ दलान के नींव खुदवा रहे थे। उसी समय पर वर्षा अधिक हुई। गली पानी से भर गया था। नीव भी पानी से भर गई। तब श्रीहरि पानी निकालते श्वेत वस्त्र के साथ श्वेत धोती, सधरी पहन कर खडे थे। संत हरिभक्त फावडा कुदाल, तगारा तथा बड़े पात्र लेकर पानी फेकते थे। वह मिट्टीवाला पानी महाराज के उपर पडता था। संत बोले हे प्रभु ! आप के वस्त्र गंदे हो रहे है। फिर भी संत-भक्तो के उत्साह वृद्दि के लिये सुंदर हाथ से सुर ताल के साथ सूर्य अस्ताचल की तरफ अग्रसर थे। तभी अनंत भुवन के नाथ श्रीहरि दादा खाचर दरबार के दलान में बैठकर बोले अब एख धुन समस्त सत्संग में करना है। उसे कभी बदलना नही है। ऐसा कहकर श्रीहरि स्वमुख से धुन गाने लगे। संत-भक्त खडे होकर सुर और तालियो के साथ गाने लगे। श्रीहरि पहले गाते –

रामकृष्ण गोविंद जय जय गोविंद ।
हरे राम गोविंद जय जय गोविंद ।
नारायण हरे श्रीमन्नारायण हरे ।
श्रीमन्न नारायण हरे श्रीमन्न नारायण हरे ।
कृष्णदेव हरे जय जय जय कृष्णदेव हरे ।
जय जय कृष्णदेव हरे, जय जय कृष्णदेव हरे ।
वासुदेव हरे जय जय वासुदेव हरे ।
जय जय वासुदेव हरे, जय जय वासुदेव हरे ।
वासुदेव गोविंद जय-जय वासुदेव गोविंद ।
जय जय वासुदेव गोविंद, जय जय वासुदेव गोविंद ।
राधे गोविंद जय राधे गोविंद !
वृदावनचद्र जय राधे गोविंद !
माधव मुकुन्द जय माधव मुकुंद !
आनंदकरुं जय माधव मुकुंद !
नरनारायण ! स्वामिनारायण ।
नरनारायण ! स्वामिनारायण किये ।
स्वामिनारायण सर्वोपरि लइये ।
आवी धुननुं दृढ कीधुं
सर्वे सीखीने कंठे करी लीधुं
स्वामिनारायण उभा पण रहे छे।

ऐसा धुन करके अपनी ताली बताते थे । सबके साथ धुन करते थे । अति आदर के साथ प्रभुजी धुन और स्तुति किये ।

यह स्पष्ट शब्दो में उल्लेखित श्रीहरिकृष्ण लीलामृत सागर में तरंग-१८ में सद्गुरु माधवदास स्वामी लिखते है।

एक प्रसंग सद्गुरु श्री आधारानंद स्वामी श्रीहरि चरित्रामृत में सागर में लिखते है । एक बार श्रीहरि जेतलपुर मे अपने महल में आये । कई प्रकार की लीला किये । संत-भक्तो को सुखी किये । एक दिन शायं को महल के झरोखे के पास बैठे हुए थे । नीचे सभी संत आरती करके धुन बोल रहे थे । श्रीहरि को अच्छा नही लगा । नीचे आकर सभा किये । यह अवसर बार-बार नही मिलता है । जो आलस्य करते है । उनकी समझदारी कम है।

दूसरे दिन श्रीहरि पलंग के उपर बैठे थे । संध्या का समय हो गया था । विशाल सभा थी । मंडप अच्छे तरह से सजा था । वृक्ष कई थे । महल में भी ऐसे वृक्ष प्रगट हुए ।

श्रीहरि खडे होकर धुन गाने लगे । सभी सभा वाले खडे होकर धुन करने लगे । श्रीहरि ताली बजाते सभी लोग ताली बजाते थे । ऐसी सुंदर अवस्था थी । भगवान जिस-जिस अवतार में जो-जो चरित्र किये थए । उसे दिव्य समझकर गाते है । भगवान उसे यमपुरी से बचा लेते है । यमपुरी से उद्धार करने के लिये अनंत अवतारो की चरित्र का वर्णन है । इस लिये श्रीहरि के अनेक ऐश्वर्य प्रताप पूर्ण चरित्र और नामो को धुन में बोलते थे । एकबार भोजन से भूख मिट जाती है । अलग-अलग होते है । जैसा भोजन वैसा स्वाद होता है । ताजे भोजन का स्वाद अलग वासी भोजन का स्वाद अलग होता है । उसी प्रकार अवतारो में साक्षात् श्रीहरि का महत्व समझे अवतारो के भेद नही है । लेकिन चरित्र में अधिक भेद रहा है । ऐसा पुराण में लिखा है ।

वेदो-पुराणो-उपनिषदो में जो भगवान के नाम मंत्र कहे है । वह सार रुप में इस धुन को श्रीजी महाराज ने वर्णित किये । यह पूरे सम्प्रदाय में गाया जाता है । सार रुप में यह स्तुति सर्व, धर्म, सर्व अवतार का रुप प्रसादी की धुन है।

सद्गुरु ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजीने ''सत्संगीभूषण'' ग्रन्थ में एक प्रसंग वर्णित है । कानम देश के कराली गाँव के अजुभाई हरिभक्त श्रीहरि का दर्शन करने अहमदाबाद आये थे । श्रीहरि नवा वास में नीम के वृक्ष के नीचे सभा में बिराजमान थे । अजुभाई साष्टांग प्रणाम करके बैठ गये । उनसे श्रीहरिने पूछा कि, अजुभाई ! आप अहमदाबाद कब आये, किस लिये आये है ? तभी अजुभाई बोले हे प्रभु ! इस शहर में हमारे शेठ के बच्चे की शादी है । उसमें आये है । कुछ समय के बाद वह मोहनलाल शेठ घर चला गया । वहाँ पर

(पेईज नं. ९)

पर्व के साथ साथ

- अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

''मामानुं घर केटले - दीवो बले एटले'' श्री नरनारायणदेव महाप्रभु के २०० वर्ष के प्रागट्य महोत्सव का पर्व अब २०० जितना ही कम है।

चार सनकादिको सहित सुंदर और उचाई में भी सप्रमाण ऐसी सरस श्री नरनारायण भगवान की मूर्तियाँ तो दैदिप्यवान है । उन मूर्तियो का इतिहास भी इतना अद्भूत और अचम्भा है । मूर्तियों का इतिहास जाने अपने अद्भूत भगवान है। और हम सभी को मिले है।

वि.स. १८७८ के फाल्गुन सुदी त्रीज को सोमवार के धन्य दिवस पर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ। माघ वद अमास्या (वि.स. १८७८) की प्रातः तक ऐसी मूर्तियाँ नही। शुद्धानंद स्वामी, नृसिंहानंद स्वामी तथा सुखानंद स्वामी ये तीन स्वामियोने मूर्ति लेने के लिये । श्रीहरि डुंगरपुर भेजे थे । अभी तक मूर्तियाँ लेकर नही आये थे।

स.गु. मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, आनंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी आदि अग्रणी संतो को चिंता हुई । और एकांत में श्रीहरि से मिलकर ''मूर्तियाँ आई नही'' इस तरह से पूछने लगे। अमावस्या की काली रात्रि थी। ''मूर्तियो को विधिवत यज्ञ मंडप की वेदिका के उपर रखने का समय आ गया। अब क्या करेगे ? ऐसे चिंता व्यक्त कर रहे थे। उसी समय मंदिर के दरवाजे पर कोई लकडी से मारने लगा कि दरवाजा खोलो । श्री नरनारायण प्रभु की मूर्तियाँ आ गई है।

दरवानने दरवाजा खोला । एक ऊटवाला मूर्तियों को अंदर लाया । और कहा ये आप अपनी मूर्तियाँ उतारे। तथा एक कागज संत को दिया। कागज में लिखा था कि ''अमावस्या के दिन शाम को रबारी के ऊँट उपर मूर्तियाँ चढाकर भेज रहे है । यह दूसरे दिन सुबह वहाँ पर पहुँच जायेगी । कहा डुंगरपुर कहाँ अहमदाबाद अमावस्या के शाम भेजी गयी मूर्ति रात्रि में अहमदाबाद मंदिर के प्रांगण में आ गयी थी । श्रीहरि खुश होकर हँस रहे थे। संतो को आश्चर्य लगा। ऊँटवाला तो मूर्ति उतारकर आराम करने के लिये भी नही रुका । तुरंत चला गया । संत बराबर ध्यान दिये कि यह कहाँ जाता है । वह दरवाजा के बाहर जाते ही ऊँट सहित अदृश्य हो गया।

श्रीहरि तुरंत मूर्ति के उपर चारो तरफ हाथ लगाकर देखे और बोले 'चार सनकादियों' सहित मूर्ति सुंदर तथा ऊँचाई में शोभा दे रही है। जैसे चाह रहे है। वैसी ही मूर्ति आई है। मूर्तियो की अधिक प्रशंसा किये। संत तथा सत्संगी भी खुश हुए।

दूसरे दिन मूर्ति ले आने वाले संत आये और बोले प्रभु । ये मूर्तियाँ तो आपकी प्रेरणा से और मर्जी से यहाँ आई है। क्योकि हम लोग तो मूर्तिकार से शीघ्रता से मूर्ति बन वाने की बात कर रहे थे । तथा मूर्तिकार के पास शीघ्रता हेतु समय ही नही था । इससे मार्ग निकालने के लिये हम लोग आप की पूजा स्मरण भाव से किये। आप की ईच्छानुसार एकादशी के रात्रि मे ये मूर्तियाँ दिव्य स्वरुप धारण दर्शन देकर बोली कि पत्थर के खाने के पास दाहिने तरफ खुदाई करने पर वहाँ से मूर्ति प्राप्त होगी । वहाँ से चार सनकादि सहित मेरी (श्री नरनारायण भगवान की) दो सुंदर मूर्तियाँ प्राप्त होगी।

''ये हमारी मूर्ति भगवान श्रीकृष्ण एक बार बदरिका आश्रम गये थे । वहाँ पर श्रीकृष्ण ने विचार किया कि,

श्री नरनारायणदेव भरतखंड के मुख्य देव (अधिपति) और राजा है। भरतखंड की प्रजा के सुख हेतु अखंड तपश्चर्या किये है। लेकिन भरतखंड में कही पर भी श्रीनरनारायणदेव की मूर्ति स्थापित नही है। इस

कारण से भरत खंड की प्रजा को उनका दर्शन नही प्राप्त होती है। इतना ही नहि मनुष्य उन्हे जानते भी नही है। इस लिये भरतखंड के प्रजा सुख हेतु भरतखंड में श्री नरनारायणदेव प्रभु की मूर्ति स्थापित करना चाहिए। ऐसा करेगे तो भरतखंड के कारीगर भी उन्हे पहचानेगे। तथा श्री नरनारायण की मूर्ति भी बना पायेगे। इसलिये श्री नरनारायण की मूर्तियाँ यहाँ बदरिकाश्रम से ले जाये तो अच्छा रहेगा।

ऐसे शुभ संकल्प भगवान श्रीकृष्णने स्वयं किया। और वर्तमान में विश्व में सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान है। वह मूर्ति श्रीकृष्ण भगवान अपने साथ भरतखंड में लाये थे। मूर्तिकारो का मुख्यालय डुंगरपुर में एक अच्छे कारीगर को देकर श्रीकृष्ण भगवान द्वारिका आ गये थे।

द्वापर और कलियुग के संन्धि काल में श्रीकृष्ण परमात्माने अपनी लीला संकुचित कर लिये। लेकिन जिस कारीगर को मूर्ति दिये थे। उससे भगवान दर्शन देकर बोले।

''आप इस मूर्ति को किसी अन्य को मत दे देना। अच्छी जगह जमीन में रख देना। कलियुग में सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान प्रगट होगे। और श्रीनगर (अहमदाबाद) में बड़ा मंदिर बनायेगे। इस कारण से उनकी प्रेरणा से यह मूर्ति मंदिर में लायी गयी है।

मूर्तियो को लेने गये। ये तीन संत और जो वर्षो से मूर्ति सम्भाल रहे थे। मूर्तिकार और कृषक इन लोगो को एक ही समय स्वयं श्री नरनारायण भगवान की मूर्ति दर्शन देकर उपरोक्त बात को बताई थी।

कितना आश्चर्यजनक और अद्‌भूत इतिहास है कि श्री नरनारायण भगवान की इन दिव्य मूर्तियो की।

सभी अवतारो से श्रेष्ठ सामर्थ से युक्त ऐसे श्री कृष्ण भगवानने स्वयं उसे तराशे, देखे और प्रमाणित किये। तथा भरतखंड में स्थापित करने का संकल्प लिये। स्वयं इन मूर्तियो की भरतखंड में लाये। और सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने आलिंगनदेकर सम्पूर्ण ऐश्वर्य इस मूर्ति में प्रस्थापित किये है।

श्री नरनारायण प्रभु की यह युग्म मूर्ति अद्‌भूत है। लेकिन जिसे श्रीकृष्ण भगवानने शोधित किया है। उसे आज भी देख सकते है। उसमें कुछ बदला नही है। कारण ?

श्रीहरिने अपना ऐश्वर्य उसमें प्रस्थापित किये है।

आइये...... इस भव्य मूर्ति का २०० वाँ प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव ''पर्व'' को ऐसा भव्य बनाये।

(अनु. पेईज नं. ७ से आगे)

विशाल मंडप बना हुआ था। मित्र भाव से अजुभाई बोले कि शेठ इतने सुंदर पंडाल में जब तक श्री स्वामिनारायण भगवान नही आये। तब तक शोभा नही बढेगी। तुरंत मोहनलाल शेठ सोना के रथ में श्रीहरि को बैठाकर अपने घर बुलाकर स्वागत किये। श्रीहरि संत-पार्षदो के साथ शेठ के घर आये। उसके घर को पवित्र किये। शेठने पूजा किया, हार पहनाया, मूल्यवान वस्त्र, आभूषण दिये। बाद में श्रीहरि बोले अब हम जायेगे। आरती और पूजा का समय हो गया है। तभी शेठने कहा! हमारे कल्याण के लिये आज आप इसी मंडप में आरती और नारायण धुन करे। ऐसी हमारी प्रार्थना है। श्रीहरिने संत-हरिभक्तो के साथ मंडप में ही आरती तथा नारायण धुन किये थे।

श्रीहरि के मतानुसार किसी भी व्यवहार में हो। जब आरती और धुन का समय हो तो सभी कार्य छोड़कर वहाँ पर पहुँच जाना चाहिए। इसमें आलस्य नही करना चाहिए। संयोगवश कभी आरती का दर्शन न हो शके तो दो मिनट राम कृषण गोविंद जो गाया जाता है। इसके कारण संध्या के समय बुरी शक्तियो का प्रकोप नही पडता है ?

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

बालवा

अहमदाबाद एस.टी. से गांधीनगर द्वारा जाते है। और गांधीनगर से एस.टी. द्वारा बालवा (उनावा) जाते है। अहमदाबाद से कार द्वारा १ घंटे ५ मिनट एअरपोर्ट से ४७ मिनट

यह गाँव ता. जिला गांधीनगर में आता है । आर्थिक एवम् सामाजिक रुप से अग्रणी गाँव है । यहाँ उत्तरादरबार हरि का मंदिर है । मंदिर में सहजानंद महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठित है । यहाँ पर श्रीहरि उनावा से माणसा जाते समय आये थे । गाँव में कुँवा प्रसादी का है । यहाँ पर श्रीहरि संतो-पार्षदो सहित जलपान करके ग्राम वासियो को वरदान दिये थे । कोई भी व्यक्ति बीमार हो तो इस कुएँ के जल पीने से ठीक हो जायेगा । यहाँ का मंदिर तीन गुम्मद वाला सुंदर दिखाई देता है।

बालवा में श्रीहरि - भगवान श्री स्वामिनारायण अपने पाँच सौ परमहंस, पार्षद तथा काठी घुडसवारो सहित दंढाव्य प्रदेश के गाँव-गाँव में घुमे थे । अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना करके उनावा गाँव से बालवा (बालागढ) गाँव में आये थे । इस गाँव में निवास करने वाले श्रीहरि के प्रेमीजन गाते०बजाते श्रीहरि का समैया किये थे । जिसने मालणी चौधरी, अमीचंद सुतार आदि भक्त थे । यहाँ के ग्रामवासियोने प्रेमपूर्वक अक्षत, चंदन, कुमकुम तथा फूलहारो द्वारा श्रीहरि की पूजा और आरती किये थे। इसके बाद श्रीहरि गाँव के पश्चिम में एक इमली के वृक्ष के नीचे सभा किये थे । कुछ समय उपदेश दिये । इसके बाद मुनि मंडल के साथ गाँव में आ गये थे । उस गाँव के भक्त वत्सल प्रभु रतनबाई और जीवरामभाई नामक दवे भक्त को दर्शन देकर गाँव में कुए के उपर जलपान किये थे । जलपान करने के बाद सर्वेश्वर श्रीहरि गाँव वालो को वरदान देते बोले कि इस कुए का जल पीने से सभी दुखो का नाश होगा ।इस तरह का आशीर्वाद देकर वहाँ से माणसा गये थे ।

श्रीहरि उनावा गाँव से बालवा (बालागढ) गाँव में आये थे । यह अवसर ''हरिलीलामृत'' ग्रन्थ के उ:तरंग ७५ में निम्नलिखित रुप से वर्णित है।

हवे त्यां थकी सधाव्या श्याम,
आव्या बालागढ जेह थाम ॥४९॥
गामथी पश्चिम दिशामांय,
क्षेत्र में ओटो कर्यो छे त्यांय ॥
आबंली तणु वृक्ष छे एक,
तेने हेठे बिराज्या विशेक ॥५०॥
मालणी चौधरी झडूनाम,
अमीचंद सुतार ते गाम ॥
दवे रतन ने जीवराम,
ए आदि आव्या त्यां अभिराम ॥५१॥
तेमने दीधा दरशनदान,
कुँवा उपर कर्या जलपान ॥

इस प्रकार श्रीहरि उनावा से बालवा आकर वहाँ के भक्तो का मनोरथ पूर्ण करके वहाँ से माणसा गये । यह अवसर 'हरिलीलामृत' ग्रंथ में मिलता है। इस गाँव से कंई संत मिले है।

गुरुपूर्णिमा के अवसर पर श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से

अमृतवचनो

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु गुरु देव महेश्वर ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

प.पू. बड़े महाराजश्री (अहम्मदाबाद मंदिर ता. २४-७-२०२१) : आदरणीय संतो और प्यारे सत्संगी भाईयो, कई वर्ष पहले की बात है । अमेरिका के एक शहर में एक सत्संगी के यहाँ गये थे । उस सत्संगी की आदत थी सभी को गुरु कहते है । कैसे है गुरु ! इस तरह सबको बुलाते थे । हमने पूछा कि आप सभी को गुरु कहकर क्यो बुलाते है । उसने उत्तर दिया । गुरु कहने पर कार्य सरलता से हो जाता है । हमने उसे समझाते हुए कहा कि अपने उत्तर-प्रदेश में ठग को भी ठग हो तो उसे गुरु कहते है । मैं यही गुरु सभी को कहता हूँ ।

हमारी दृष्टि से तीन प्रकार के गुरु होते है । एक गुरु भगवान के साथ जोडता है । अपने स्वयं पीछे रहता है । अपना असित्व ही न हो इस तरह का व्यवहार करता है । रामानंद स्वामी ऐसे श्रेष्ठ गुरु थे । वह अपनी शक्ति छिपाकर महाराज की शक्ति का सम्मान करते थे । मुक्तानंद स्वामी भी ऐसे थे । स्वयं श्रीजी महाराज से सीनियर होने के बाद भी हमेशा महाराज का गुणगान करते थे । दूसरे मध्यम प्रकार के ऐसे गुरु होते है । जो भगवान को आगे रखते है । महिमा करते करते स्वयं का काम भी कर लेते है । तीसरे छोटे प्रकार के गुरु होते है । जो महाराज और भगवान को किनारे कर देते है । और स्वयं आगे आ जाते है । अब निश्चित हमे करना है कि हमें किस प्रकार का गुरु चाहिए । मैं अयोध्याप्रसादजी दादा के निमित्त ''धर्मकुलवंदना महोत्सव'' सभा में कह रहा हूँ कि दोनो देश का इतिहास देखे । दोनो देश के आचार्यो ने स्वयं को आगे नही किया है । महाराज को आगे किये है । स्वामीने कहा था कि मछली के आँख भेदने के समय अर्जुन को केवल आँख ही दिखाई दे रही थी । हमें उसी प्रकार 'पर्व' का उत्सव देखना चाहिए । इसके अलावा कुछ नही देखना चाहिए । श्री नरनारायणदेव बहुत शक्ति शाली है । इस देव के प्रांगण में महोत्सवो की परम्परा देखे । एक अच्छे से अच्छे उत्सव पूर्ण हुए है । इस लिये यह उत्सव भी भव्यता से मनाय जायेगा । इसमें कोई संदेह नही है । संत-भक्त भी इस उत्सव के लिये कमर कस लिये है । वास्तव में सभी धन्यवाद के पात्र है । महाराज द्वारा स्थापित इस देव की महिमा वचनामृत के प्रत्येक पन्ने पर लिखा है । जो संसार में प्रसिद्ध है । यह उत्सव सर्वोपरि हो ऐसे प्रार्थना है ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : गुरुपूर्णिमा के आज पवित्र असवर पर गाँव गाँव से आये । पिछली पंक्ति में बैठे सभी को पूर्ण भाव से जय श्री स्वामिनारायण । इसके पूर्व के कार्यक्रमो में आप से नजदीक से मिलकर बाते कर सकते थे । जो वर्तमान काल में सम्भव नही है । देव का दर्शन मिल गया तो सभी दर्शन मिल गया ऐसा समझे । पिछली डेढ वर्ष से कोविड-१९ चालू है । कई हरिभक्त परिवार अपने सदस्यो से कोविड-१९ चालू है । कई हरिभक्त परिवार अपने सदस्यो को खोये है । तथा अन्य तरह के दुख भी मिले है । फिर भी जिसकी देव के प्रति निष्ठा रही । उन्हे देव आँच नही आने दिये होगे । 'पर्व' की जो तारीख निश्चित

की गई है। वह बदल भी सकती है। इस में परिवर्तन के लिये आप सभी तैयार रहियेगा। देव का उत्सव है। और उत्सव देव की इच्छानुसार ही होगा। आप सभी का भाव और निष्ठा है। इसलिये अधिक मात्रा में एकत्र हुए है। हर प्रकार का ध्यान-सावधानी रखेगे तो 'पर्व' का आनंद प्राप्त कर सकेगे। पर्व के लिये छोटी-बडी सेवा देने वाले को धन्यवाद। आप सभी का स्वास्थ्य ठीक रहे। ऐसा श्री नरनारयणदेव के चरणो में वंदना करता हूँ।

प.पू. महाराजश्री : काफी समय के बाद भेट हो रही है। इस कारण से इतना आनंद प्राप्त हो रहा है कि सेर मे खून नही किलो में खून बढ गया है। कुछ लोगो बिना मास्क के दिखाई दे रहे है। लालजी महाराजने बताया है कि हमें अपना हित परिवार तथा प्रत्येक का हित देखना मानवता का धर्म है कि नही ? हमारी सबसे विनती है कि सावधानी रखें। ऐसा नही की संत और हरिभक्त लम्बे समय के बाद मिले है। सभी को धन्यवाद क्योकि आप सभी देव के प्रांगण में बैठे है। पीछे खडे भक्त तप कर रहे है। देश-विदेश के सभी भक्तो के लिये देव के चरणो में मेरा हृदय पूर्वक प्रार्थना है। क्योकि आप सभी देव के है इस लिये हमारे है।

अब महत्व की दो बात कहता हूँ। एक तो देव के गर्भगृह से सटकर प्रथम विभाग जिसमें संत दर्शन करने जाते है। वहा पर दरवाजे के उपर बोर्ड लगा है। संतो के अलावा धोती बगैर हरिभक्त प्रवेश नही करे। यह मर्यादा इस लिये रखी गई है। वहाँ पर हिंडोला होता है। हिंडोला में महाराज का स्वरुप होता है। गणेश स्थापना होती है। पूजन होता है। इस लिये मर्यादा का पालन है। देव की मर्यादा भंग नही होनी चाहिए।

दूसरी बात यह है कि हार पहनाने का कार्यक्रम नही किया जायेगा। इसमें समय अधिक चला जाता है। आप की शिकायत करते है कि दूसरे लोग हार पहनकर चले गये। अपने लोग बच गये। हम लोग भी आप से मिलने आते है। हम प्रणाली को बदलना नही चाहते है। लेकिन समय की माँग, सदुपयोग करने के लिये देव के लिये आवश्यक है। समय मिलने पर आप सब देख कर खुश होगे। इसलिये साथ-सहकार की अपेक्षा रखता हूँ। यह बात आप को अच्छी लगी हो या न लगी हो कोई बात नही है। लेकिन यह परिवर्तन अन्ततः आपकी सुविधा के लिये ही है।

दत्तात्रेय भगवानने २४ गुरु किये थे। हमारे तो २४०० गुरु है। छोटे बच्चे से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। आँख खोलकर नही बल्कि दृष्टि खुली रखना चाहिए। आँख तो महाराज ने सबको दिये है। लेकिन दृष्टि होने पर गुण आता है। गुणग्राही वालि की महाराज बात कहे है। दूसरी कही पर ऐसी बात नही कहते है। गुण लेकर सभी का हित हो ऐसा कर्म करना चाहिए। दूसरा साथ में क्या जायेगा ? कुछ ले जा सके तो बतायें।

महाराज सभी का कल्याण करे। मंगल करे। लेकिन ध्यान देना होगा। क्योकि अभी अक्टूबर और जनवरी के बीच खराब परिस्थिति आने वाली है। लोकडाउन आ सकता है। कुछ आगे पीछे हो सकता है। उत्सव के तारीख में बदलाव आ सकता है। हमें क्या असर होगा। ब्रह्मानंद के प्यारे उन्हे दिन में दिवाली। भगवान मिले है और ये भगवान मिले है तभी अपना सत्य जन्म होगा। सत्संगी की व्याख्या क्या ? कंठी तो कई लोग पहनते है। चाँदला तो चोर लूटेरे भी करते है। सामने सिंहासन में बैठे है। उनकी पहचान होने पर सच्चे सत्संगी होगे। पहचान होना कठिन बात है। हम उस प्रोसेस में है। इसके लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। प्रयत्न नही छोडना चाहिए। ९९% प्रयत्न पर १% आशीर्वाद मिलता है। १०००% पुरुष प्रयत्न का काम करें।

देव की जो इच्छा होगी वही होगा। देव को ब्रेक लेना होगा तो ऐसा होगा। तारीख में परिवर्तन करना पडे तो बतायेगे। यह भी सत्संग - सम्प्रदाय के हित में होगा। सिद्धान्त यह है कि देव है तो यह संस्था है। संस्था है तो यह सब है। हम सब भी है। देव से जुडकर रहना यही

(पेईज नं. १५)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

अपने म्युजियम का मौसम अति सुहावना है। दर्शनार्थी भी आने लगे है। यज्ञ तथा श्री नरनारायणदेव के अभिषेक के यजमान पूर्ववत हो गये है। हरिभक्त म्यूजियम में भेट अच्छे से दे रहे है। यह सूची उनकी साक्षी है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री यज्ञ - जुलाई-२०२१

दि. ११-०७-२०२१ श्री नरनारायणदेव प्रसन्नता हेतु महिला मंडल श्री स्वा. मंदिर कालुपुर - प्रे. वनराज भगत।

दि. १८-०७-२०२१ श्री सुरेशभाई धेलाभाई पटेल विहारवाले - वर्त हिंमतनगर।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची जुलाई-२०२१

दि. ०९-०७-२०२१ डॉ. हरिकृष्ण गोकलभाई पटेल - सापावाडा, ता. ईडर

दि. ११-०७-२०२१ (प्रातः) श्री मगनभाई पी. लहेरी (बापुनगर)।
(११ बजे) श्री रोजासरा किशोरभाई केशवलाल सोनी परिवार (कारोलवाले-अहमदाबाद)

दि. १६-०७-२०२१ अ.नि. कुवरजीभाई लाधाभाई वरु परिवार (अहमदाबाद)

दि. २५-०७-२०२१ (प्रातः) वंदनीय गुरुजी शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी गांधीनगर से-२३ की प्रेरणा से प.भ. लक्ष्मीचंदभाई मगनलाल ठक्कर परिवार - वर्त - भगवतीबेन लक्ष्मीचंद्र ठक्कर
(११ बजे) प.भ. कमलाबेन दिनेशभाई - थलतेज।
(दोपहर) श्री जयकिशन प्रशांतभाई परमार (कालुपुर)

दि. ३०-०७-२०२१ प.भ. ईश्वरभाई मोहनभाई पटेल - सापावाडा - ता. ईडर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की नामावलि- जुलाई-२१

रु. १,५१,०००/- प.भ. भीखाभाई रामभाई सरधारा - बापुनगर - वर्त. रमणीकभाई सरधारा तथा अश्विनभाई सरधारा।

रु. १,११,१११/- प.भ. श्री डाह्याभाई नारणभाई पटेल सहपरिवार - माणसा।

रु. १,००,०००/- प.भ. पटेल रजनीबेन हरेशकुमार - वडोदरा।

रु. ५१,०००/- श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ - संत दीक्षा के लिये।

रु. ५०,०००/- प.भ. कनुभाई शीवाभाई पटेल इंजीनियर - पालडी।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૯૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "देवी के आसुरी प्रकृति का मुख्य कारण है, सत्पुरुष का 'कोप' और 'अनुग्रह'"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल – घोडासर)

एकबार वडताल के १५ वे वचनामृत में शोभाराम शास्त्री महाराज ने प्रश्न पूछा । ''हे महाराज ! दैवी और आसुरी दो प्रकार के जीव होते है । यह अनादिकाल से है । कोई योग करके होता है । अथवा स्वभाव से या निमित्त से पैदा होता है । इसके लिये तीन वस्तुए है । एक तो ऐसा है कि जब प्रलय आती है । तब दैवीय और आसुरी दो प्रकार के जीव होते है । यह माया में लीन हो जाते हैं । जब सृष्टि की उत्पत्ति होती है । उस समय जो कर्म करते हुए माया में लीन हो जाता है । उसी कर्म से जन्म लेता है । दूसरा यह है कि कितने साधारण जीव दैवी आसुरीका साथ देते है । उदाहरणार्थ यदि दैवी गुणवाला दैवीय गुण लेकर उत्पन्न होते है । यदि कुसंगी का साथ मिलजाने पर दैवीय गुण आसुरी गुण में बदल जाता है । उसी प्रकार आसुरी गुण वाला व्यक्ति अच्छे सत्संग द्वारा दैवीय गुणो में बदल जाता है । तिसरे प्रकार के लोग जैसा कर्म करते है । वैसा फल भोगते है । इन दोनो गुणो के लिये सत्पुरुषो के 'कोप' और अनुग्रह होता है । उदाहरणस्वरुप जय-विजय भगवान के पार्षद थे । वे सत्पुरुष सनकादि से द्रोह किये । इस कारण से आसुरी भाव उनमें पैदा हुआ । उसी प्रकार प्रहलादजी थे । जो असुर कुल में जन्म लिये थे। लेकिन नारदजी के मिलने से उनमें दैवीय गुण का विकास हुआ । बडे व्यक्ति का जिसके उपर 'कोप' होता है । वह आसुरी प्रवृत्ति वाला हो जाता है । इस लिये जिसे अपना कल्याण करना हो उसे 'भगवान' का भक्त बन जाना चाहिए । किसी से द्रोह नही करना चाहिए । भगवान तथा भगवान के भक्त जिससे खुश हो ऐसा कार्य करना चाहिए ।

इसी प्रकार एकबार शुकानंद स्वामी गढडा अंत्य प्रकरण में १४ वे वचनामृत में महाराज से प्रश्न पूछे थे कि ''दैवीय और आसुरी जीव को कैसे पहचान सकते है ।'' क्योकि ? आसुरी कौन है और दैवी कौन है वह बाहर से पता नहीं चलता है । आसुरी गुण वाला भी बाहर से सामान्य दिखाई देता है ? महाराज बोले ''दैवीय जीव के अन्दर काम, क्रोध लोभ खराब परिस्थिति में आता है । यदि अच्छे समय से है तो यह समाप्त हो जाता है । और सत्य सत्संग में आता है । उससे खराब दोष दूर हो जाता है । यह परिस्थिति बस खराब थोडे समय के लिये होते है । क्योकि वह दैवीय गुण वाला व्यक्ति होता है । उसमें अवगुण एक वही सकता है । आसुरी व्यक्ति वाले में काम, क्रोध, मद, लोभ कभी समाप्त नहीं होता है । वह सत्संग में अच्छा हरिभक्त होता है । लेकिन वह अपनी प्रवृत्ति अवश्य करेगा । जन्म के साथ अवगुण लेकर वह जन्म लेता है । एकबार लालजी महाराजने महाराजश्री से प्रश्न पूछे कि सत्संग कई बार करते है । बाद में समाप्त हो जाता है । यह ऐसा क्यो होता है ? उसका कारण अंदर का गुण शीघ्रता से बदलता नही है । यही प्रश्न वचनामृत में

अयोध्याप्रसादजी महाराजने भी महाराज से पूछा था । ''किसी की बुद्धि भी अधिक होती है। शास्त्र का ज्ञान भी अच्छा होता है। दूसरे की बुद्धि भी कम होती है। शास्त्र का ज्ञान भी कम होता है । अधिक बुद्धि वाला सत्संग से विमुख हो जाता है। और कम बुद्धिवाला सत्संग में टिका रहता है। उसका क्या कारण है ? बाद में श्रीजी महाराजने उत्तर दिया कि ''इस संसार में दैवीय और आसुरी दो प्रकार के जीव होते है। इसमें से आसुरी जीव कम बुद्धि के कारण सत्संग से दूर हो जाता है। लेकिन दैवीय व्यक्ति कम बुद्धि के बाद भी सत्संग से दूर नही होता है । जिस प्रकार मिर्चे का बीज, नीम का बीज और धतुरे का बीज उसे बोकर नित्य चीनी का पानी उसमें डाले तो भी मिर्चा तीखा, नीम कडवी, धतुरा विषैला ही गुण धर्म रखेगा । गन्ने को लगाकर नीम की खाद डालने पर भी गन्ना मीठा ही रहता है । उसी प्रकार दैवीय जीव भगवान के सामने रहता है। आसुरी जीव भगवान से दूर चला जाता है।

यहाँ पर बताने का अर्थ यह है कि जो आसुरी जीव होता है। ये लोग सत्संग में आकर जल्दी से नही बदलते है। इसमें शीघ्रता से दैवीय गुण नही आता है। अच्छे संत के साथ मिलने पर स्वभाव बदलता है । लेकिन महाराज वडताल में ७ वें वचनामृत में बताये है कि ''आसुरी जीव दैवीय नही बन सकता है। क्योकि जन्म से आसुरी वृत्ति वाला होता है। यह कितना भी सत्संग में आये आसुरी भाव समाप्त नही हो सकता है । बार-बार सत्संग करे । तथा मोक्ष मार्ग से प्रसार हो तो आसुरी प्रवृत्ति से दूर हो सकता है।''इसके लिये वह किसी से द्रोह नही करे। बडे लोगो को आदर से । प्रत्येक घटनाके पीछे कोई उद्देश्य होता है। जो लगाव परिवार से रहे । वही लगाव सत्संग से भी होना चाहिए। इससे किसी के मन में अभाव नही आये। भगवान के भक्त से द्रोह नही करें। हरिभक्तो के प्रति अपने समान ही प्रेम भाव रखे । संत लोग जब हमारे स्वभाव के बारे में बताते है। तो हम अपना स्वभाव नही छोडते है। संत का अवगुण आ जाता है। यह अपने से बड़े के साथ द्रोह है। अपनी प्रकृति रुक जाती है। इसलिये हमेशा जागृत होना पडेगा । आप सभी को महाराज अधिक शक्ति दे । ऐसी महाराज के चरणो में प्रार्थना है।

(अनु. पेईज नं. १२ से आगे)

गुरुपूर्णिमा है। शीदने भटको चो, मतपंथ मा रे..... यही गुरु पूर्णिमा है। भगवान मिले है। मर्यादापूर्वक इस समय में व्यतीत करे। हम क्या है इस काल में सभी को पता चल गया है। कितने पैसे है। एक सूई और दवा के लिये कितना पैसा देने के लिये तैयार थे । पैसा काम में आता है ? धन की आवश्यता होती है। मैं धन का विरोधी नही हूँ। लेकिन धन से सुविधा मिलती है। सुख नही मिलता है। महाराजने जो दिया है उसका उपयोग करें। आनंद मर्यादा में रहे !

महंत स्वामीने मुख्य यजमान के धन का विवरण दिये थे । यह सुनकर धबराना नही । कम से कम धन देने वाले का उतना योगदान है । ३६ वर्ष पहले दस पैसे के सिक्के मेरे कबाट में चिपका कर रखा है । हरिभक्त के भावना की कींमत है। मुझे हरिभक्तो के पसीने की जगह पर खून दिखाई देता है। हरिभक्त का अपनापन है। पुराना सोफा बदला नही जायेगा। लेकिन देव के लिये सब करना है।

बापजी फोन में कुछ देखे है। हमारा सम्बन्ध अलग है। पिता होते हुए। मित्र होना या पुत्र होना ये हमारे है। बाकी दिवाल तो टूट जाती है । इस दिवाल को तोडे ! वह भगवान-भगवान नही है। जहाँ पर दिवाल टूटनी चाहिए। चूल्हा एक होना चाहिए। तभी सुख प्राप्त होगा।

आप सभी का महाराज कल्याण करे। मंगल करे, सुख दे, आनंद में रहे। धन्यवाद !

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में संत दीक्षा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा आज्ञा-आशीर्वाद से तथा समस्त धर्मकुल की खुशी से ऐसे महामारी कोरोना के विषम समय मं भी अपने अहमदाबाद, मूली और कच्छ-भुज के संत-मंडल द्वारा १९ पार्षद मुमुक्षुने आषाढ सुद देवशयनी एकादशी के शुभ दिन पर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में हजारो संत-हरिभक्तो (सरकार के निर्देशानुसार) की उपस्थिति में संत महादीक्षा परमपूज्य धर्मधुरंदर आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ करकमलो द्वारा शास्त्रोक्त विधि से पूर्ण हुआ । आज प.पू. आचार्य महाराजश्री अधिक खुश होकर सभी नये दिक्षार्थी संतो को आशीर्वाद दिये । प्रत्येक संत प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और ठाकुरजी का दर्शन किये । बड़े संत भी दर्शन करके अपने आसन पर बैठे थे । सम्पूर्ण सुंदर आयोजन अहमदाबाद मंदिर के विद्वान कथाकार पूज्य महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी स्वामी के मार्गदर्शन में हुआ था ।(कोठारी स्वामी)

अहमदाबाद मंदिर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव भव्यता से मनाया गया

पग छेलो छे आजे उपाय रे,
बहु जीव तरशे आ मांय रे ॥
धर्मवंशी आचारज धार्या रे,
गुरु करी गादीये बेसार्या रे ॥६॥
(पु.प्र.)

सर्वावतारी सर्वोपरी भगवान श्री स्वामिनारायणने सम्प्रदाय को उत्तर और दक्षिण इस प्रकार दो विभाग करके क्रमानुसार अहमदाबाद और वडताल इस प्रकार दो सनातन गद्दी बनाये । उन गद्दी पर धर्मदेव के कुल में धर्मवंशी आचार्य (गुरु) पद की स्थापना किये है । उस परम्परा में श्रीहरि के सातवे वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का गुरु पूजन का कार्यक्रम परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से और पू. महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी के प्रेरणा और मार्ग दर्शन से कोरना काल में सुरक्षा का ध्यान रखते हुए ता. २४-७-२०२१ (गुरु पूर्णिमा) के दिन भव्यता के साथ मनाया गया ।

इस अवसर पर मंदिर के तीनो प्रांगण फूल और लताओ से हरे थे । सभा मंडप रंग बिरंगे ध्वज और पताके से सुशोभित थे । सभी भक्तजन धर्मकुल तथा महोत्सव का आराम से दर्शन कर सके इस उद्देश्य से मंदिर के प्रांगण के सभा मंडप को बदलकर सभी को बैठने के लिये कुर्सी का प्रबन्ध किया गया था ।

श्रीहरि के तीनो अपर रुपो को ढोल नगारे के आवाज के साथ संत-भक्तो ने स्वागत समैया किये थे । प.पू. महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ने सर्व प्रथम गणपति, हनुमानजी का दर्शन करके श्रीनरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव और श्री धर्म भक्ति हरिकृष्ण महाराज की श्रृंगार आरती उतारी श्री घनशअयाम महाराज सहित सभी देवताओ का दर्शन करके सभा मंडप के पाट पर बैठे थे । प.पू. बड़े महाराजश्री निवृत्ति के मर्यादा का सम्मान करते हुए कुर्सी पर बैठे थे ।

सर्व प्रथम मंदिर के ब्राह्मणो ने इस प्रसंग के मुख्य यजमान प.भ. श्री डाह्याभाई नारणदास पटेल वर्त. पुत्र मेहुल और पुरव (माणसावाले) परिवार द्वारा श्रीहरि के तीनो स्वरुपो का स्वस्तिवाचन के साथ पूजन-अर्जन कराये थे । इसके बाद समस्त संत समुदाय के प्रतिनिधि के रुप में पू. महंत स्वामी के साथ अन्य पाँच बड़े लोग ब्रह्मनिष्ठ संतो द्वारा तथा उपस्थित हरिभक्तो द्वारा समस्त यजमान परिवार ट्रस्टीगण और गणमान्य हरिभक्तोने श्रीहरि के तीन अपर स्वरुपो की आरती उतारे थे ।

प.पू. महंत स्वामीने सभा संचालन के साथ महोत्सव के सूचित स्थल (मेहसाणा कलोल हाईवे, जमियतुपरा प्रभा हनुमानजी के पास सड़क के किनारे) तथा मुख्य यजमानो द्वारा दी गई विधि और संतो को बाँटे गये अनेक विस्तार में प्रचार-प्रसार का कार्यभार की रुप रेखा बतायी गयी थी ।

अंत में श्रीहरि के तीनो स्वरुपो के इस पावन अवसर के अनुरुप शुभ आशीर्वाद दिये थे । इस अवसर पर धामो धाम से संत तथा हजारो भक्तजन दर्शन करके धन्य भागी हुए । सभी के लिये सुंदर प्रसादी की व्यवस्था की गई थी ।

समस्त कार्यक्रम का लाईव प्रसारण कालुपुर मंदिर के यु-ट्यब चैनेल से किया गया था । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम के गाँवो में "पर्व" महोत्सव के अवसर पर सत्संग सभाये

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् आशीर्वाद से प.पू. १०८ लालजी श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के नेतृत्व में २०० वर्ष (श्री नरनारायण द्विशताब्दी महोत्सव) के उपलक्ष्य में स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर धाम द्वारा महंत स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशधासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन में जेतलपुर देश के गाँवो में प्रत्येक मास तारीख अनुसार सत्संग सभा का संत मंडल द्वारा आयोजन किया गया।

प्रत्येक महीने की १ तारीख को गामडी ग्राम सभा, ३ तारीख को असलाली ग्राम सभा, ५ तारीख को महिजडा ग्राम सभा, १५ तारीख को जेतलपुरधाम ग्राम सभा, १७ तारीख को बारेजा ग्राम सभा, १९ तारीख को वसई ग्राम सभा, २२ तारीख को मीरोली ग्राम सभा, २६ तारीख को नवागाम ग्राम सभा, २८ तारीख को महिला ग्रा सभा, ३० तारीख को पालडी-कागज ग्राम सभा, प्रत्येक ग्राम के हरिभक्तोने अधिक उत्साह के साथ सभा में भाग ले रहे है।(महंत के.पी. स्वामी तथा शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) में केसर जलाभिषेक और महापूजा

श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से तथा स.गु. भंडारी स्वामीश्री जानकीवल्लभदासजी (पोरडा) की प्रेरणा से और महंत शा. स्वामी वासुदेवचरणधासजी के मार्गदर्शन से प.भ. श्री बापुभाई पी. शिंगाणा के यजमान पद से जेठ सुद पूनम ता. २४-६-२०२१ के दिन प्रातः ६-३० पर मंदिर में बिराजमान बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का दिव्य केसर जलाभिषेक हुआ था। मंदिर के दोनो पूजारी स्वामी के साथ कालुपुर मंदिर से आये श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्र. स्वामी मुकुन्दानंदजी भी केसर स्नान में जुडे थे।

प्रातः ८-३० से ११ बजे के मध्य आनलाईन महापूजा का आयोजन किया गया था। कोरोना महामारी को ध्यान में रखकर यजमानश्री मंदिर में बैठकर कथा अन्य भक्त घर पर रहकर महापूजा का दिव्य लाभ लिये थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का लाईव प्रसारण अपने कालुपुर मंदिर से यु-ट्यूब चैनेल से किया गया था।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच और हर्षद कालोनी (बापुनगर) में "पर्व" के उपलक्ष्य में हो रहे कार्यक्रम

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद पू. भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी (पोरडा) की प्रेरणा और महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी और महंत शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी के मार्गदर्शन से आने वाले पर्व के उपलक्ष्य में ता. ३-७-२१ से प्रारम्भ होकर प्रतिशनिवार रात्रि ९ से ११ तक सभा मंदिर के महामंडप में संतो के सानिध्य में हुआ। प्रथम सभा में समूह भक्त चिंतामणी का पाठ इसके बाद प्रत्येक सभा में धुन, कीर्तन संतो द्वारा कथा वार्ता, श्री नरनारायण अष्टक और अंत में आरती तथा प्रसादी की सुंदर व्यवस्था थी। ता. १८-७-२१ की सभा में कालुपुर मंदिर से संत आये थे। श्री स्वामिनारायण मंत्र लेखन की नोट बुक में हरिभक्तोने श्रध्धा एवम् समयानुसार मंत्र लेखन का कार्य नियमित किये।

ता. ११-७-२१ को रविवार प्रातः ५ बजे संतो के साथ विशाल संख्या में भक्तगण पदयात्रा में जुड कर कालुपुर मंदिर श्री नरनारायण आदि देवो का मंगल रुप को दर्शन किये थे। द्वितीय पद यात्रा ता. २०-७-२१ को पूर्ण हुई। इसके बाद प्रत्येक एकादशी के दिन मनाया जायेगा।

हर्षद कोलोनी के मंदिर में प.भ. श्री दासभाई के मार्गदर्शन से ता. २०-६-२१ से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार तथा रविवार के अलावा रात्रि ९ से ११ बजे मंदिर अगल-बगल निवासी क्षेत्रो में लिखे अनुसार प्रवृत्ति के साथ सभा पूर्ण हुई। बहनो के द्वारा मंदिरो मं अलग-बगल के घरो में दोपहर के बाद अढाई घंटे विशेष धुन किया गया। सभा में महंत वासुदेवचरणदासजी, पूजारी ब्र. स्वा. मुकुंदानंदजी, महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, महंत शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी तथा शा. स्वा. रामकृष्णदासजी आदि ब्रह्मनिष्ठ विद्वान संत समयानुकूल आकर ''पर्व'' के उपलक्ष्य में अमतृवाणी का लाभ दिये।

ता. ४-७-२१ रविवार को हर्षदकालोनी से कालुपुर मंदिर तक प्रथम पदयात्रा तथा ता. ११-७-२१ को दूसरी पद यात्रा पूर्ण हुई। पदयात्रा का कार्यक्रम ता. २४-७-२१ गुरु पूर्णिमा से शुरु होकर आगामी 'पर्व' महोत्सव तक प्रति पूनम को मनाया जायेगा।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

गांधीनगर से-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा हिंडोला महोत्सव और मंत्रलेखन यज्ञ

विश्व का सर्वप्रथम स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद में बिराजमान श्री नरनारायण भगवान के द्विशताब्दी के प्रसंग पर मनाये जाने वाला ''पर्व'' के उपलक्ष्य में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य

महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से अपने गांधीनगर से-२३ स्वामिनारायण मंदिर में हिंडोला महोत्सव के पहले दिन शास्त्री स्वामी श्री हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायण भगवान की रेखांकृति प्रतिकृति के साथ हिंडोला बनाकर श्री नरनारायण भगवान को हर्ष के साथ झूलाया गया। गांधीनगर के भाविक भक्तजनोने सरकारश्री के निर्देशानुसार इस कलात्मक हिंडोला का लाभ लिये।

''पर्व'' महोत्सव के उपलक्ष्य में देश विदेश के अनेक सेवा भक्ति के कार्यक्रम मनाये जा रहे है। उसमें मंत्र लेखन विभाग में गांधीनगर से-२३, स्वामिनारायण मंदिर में शास्त्री स्वामीश्री हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से मंत्र लेखन यज्ञ प्रारम्भ किया गया है। मंत्रलेखन के लिये अहमदाबाद मंदिर द्वारा प्रकाशित नोटबुक के साथ यहाँ के मंदिर द्वारा निशुल्क पेन दी गई है।

अभी तक २००० से अधिक नोटबुक सत्संगियो को दी गयी है। सत्संगियो को मंत्र लेखन हेतु पू. लालजी महाराजश्री के मंत्रलेखन के यज्ञ को शास्त्री स्वामीने गति प्रदान किये है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाणा द्वारा "पर्व" महोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग सबाओ का आयोजन

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से आनेवाले परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान के २०० वे पाटोत्सव-महाउत्सव ''पर्व'' के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाना द्वारा स.गु. महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा से अहमदाबाद नारणपुरा स्वामिनरायण मंदिर के संत स्वामी प्रेमस्वरुपदासजीने निम्न लिखित गाँव के हरिभक्तो को कथा वार्ता का लाभ दिये थे। ता. २५-६-२१ करशनपुरा, २६-६-२१ को मोटप, २७-६-२१ को कडी, ता. २९-६-२१ को धिणोज, ता. १-७-२१ को वसई (डाभला), ता. ३-७-२१ विसनगर और ता. ४-७-२१ को मेहसाना आदि गाँवो में रात्रि ९ से १०-३० के बीच कथा-वार्ता कीर्तन धुन और ''पर्व'' महोत्सव प्रसंग में अनेक कार्यक्रम और परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की महिमा महात्म सभी को सरल भाषा में समझाये थे। उपरोक्त गाँवो के हरिभक्त तथा उत्साह से अपने ''पर्व'' महामहोत्सव को मनाया जा रहा है। (हितेन्द्रसिंह राओल-मेहसाणा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा समस्त सत्संग समाज के सहयोग से वर्तमान कोरोना काल में जरुरतमंद लोगो को लगातार एक मास तक दोनो समय सौ आदमियो को टिफिन सेवा घर तक प्रदान किये थे।

इतने असह्य गर्मी में ठाकुरजी को ता. १४-५-२१ से ता. २०-६-२१ तक पूजारी स्वामीने सुंदर वस्त्र पहनाकर सभी को दर्शन कराये गये। (पार्षद विजय भगत - हिंमतनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा "पर्व" के उपलक्ष में तलपद (भाई-बहन के मंदिर में) अखंड महामंत्र धुन

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान के परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायण भगवान के २०० वे पाटोत्सव महामहोत्सव ''पर्व'' के उपलक्ष में श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा तलपद भाईयो और बहनो के दोनो मंदिर मिलकर ता. २६-३-२१ से ६-७-२१ प्रतिदिन शायं ४ से ६ के मध्य सभी भाई-बहन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की २०० घंटे धुन किये थे। (कोठारीश्री, श्री स्वा. मंदिर तलपद और बहनो के मंदिर - लीलाबेन डांगरवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर "पर्व" के उपलक्ष में ब्लड डोनेशन कैम्प

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर द्वारा के.एम.सी. जनरल अस्पताल संचालित जे.एम. कडकिया (ग्रीन फाउन्डेशन) लायन्स क्लब बालासिनोर और रेडक्रास सोसायटी के सहयोग से अपने ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष में अपने श्री नारायण भगवान के आश्रित हरिभक्तो ने ४४ बोतल रक्तदान किये थे। जिस में कोठारी मधुभाई त्रिवेदी, राकेशभाई और गोविंदभाई और युवा सत्संगियो ने सुंदर सहयोग दिये थे। (प्रवीण जे. सेवक - लायंस क्लब)

प्रतापपुरा गाँव में "पर्व" के उपलक्ष में धुन-कथा-वार्ता

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायण भगवान के २०० वे पाटोत्सव महोत्सव ''पर्व'' के उपलक्ष में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञानुसार गांधीनगर मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी और शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी आये थे। गाँव के सभी लोगो ने कथा वार्ता करके ''पर्व'' की रुपरेखा समझाये थे। (कोठारी श्री प्रतापपुरा)

अहमदाबाद शहर चौरासी की "पर्व" के उपलक्ष में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायण भगवान के द्विशताब्दी महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञानुसार स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से अहमदाबाद शहर चौरासी के सभी हरिमंदिर और शिखर बध्ध मंदिर जिस में अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी तथा अहमदाबाद शहर के सभी मंदिर के महंतश्री तथा हरिमंदिर के प्रमुख उपस्थित थे। सभी को शास्त्री श्रीराम स्वामीने पर्व उत्सव के सभी कार्यक्रमो से अवगत किये थे।(स्वा. देवप्रकाशदास)

"पर्व" के उपलक्ष में बालवा गाँव में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से एवम् प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान के २०० वे पाटोत्सव महामहोत्सव ''पर्व'' के उपलक्ष में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा प्रेरणा से तथा शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशधासजी के मार्गदर्शन से बालवा गाँव के सभी हरिभक्तो के उपस्थिति में शा. पी.पी. स्वामी और शा. राम स्वामीने ''पर्व'' उत्सव के अर्न्तगत सभी रुपरेखा के साथ कथावार्ता का लाभ दिये थे । (कोठारीश्री बालवा)

कर्मशक्ति अहमदाबाद "पर्व" के उपलक्ष में धुन

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायण भगवान के द्विशताब्दी वर्ष ''पर्व'' के उपलक्ष में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से गांधीनगर से-२ के महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से कर्मशक्ति मंदिर में महामंत्र धुन का प्रारम्भ शा. पी.पी. स्वामी और पूजारी देवप्रकाशदासजीने सभी हरिभक्तो को सुंदर कथा का लाभ दिये थे।

कल्याणपुरा गाँव में "पर्व" के उपलक्ष में महामंत्र की धुन, कथा, वार्ता

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से एवम् प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायण भगवान के द्विशताब्दी वर्ष ''पर्व'' के उपलक्ष में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञप्रेरणा से गांधीनगर से-२ मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी और शा. स्वामी रामकृष्णदासजी आदि संत मंडल हरिभक्तोने इस कथा का लाभ देकर ''पर्व'' की रुपरेखा समझाये थे । (कोठारीश्री कल्याणपुरा)

ईश्वरपुरा गाँव में "पर्व" के उपलक्ष में महामंत्र धुन-कथा-वार्ता

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के खुशी से ''पर्व'' के महामहोत्सव के उपलक्ष में प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा प्रेरणा से ईश्वरपुरा गाँव में गांधीनगर (से-२) महंत स्वामी पी.पी. स्वामी और शा. स्वा. रामकृष्णदासजी आदि संतोने यहाँ के मंदिर में हरिभक्तो की सभा में कथा-वार्ता-धुन-भजन कीर्तन करके सभी हरिभक्तोने पर्व महोत्सव में अनेक प्रकार की सेवा करने की प्रेरणा दिये थे।(कोठारीश्री ईश्वरपुरा)

लींबोदरा गाँव में "पर्व" के उपलक्ष में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से ''पर्व'' महोत्सव के उपलक्ष में प.पू. लालजी महाराजश्री प्रेरणा-आज्ञा से लींबोदरा गाँव में महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) तथा शा. स्वा. रामकृष्णदासजी कथा वार्ता द्वारा पर्व महामहोत्सव की रुपरेखा के साथ सभी को सेवा करने की प्रेरणा दी । (कोठारीश्री लींबोदरा)

आर.सी. टेक्निकल घाटोलडीया मंदिर "पर्व" के अवसर हेतु सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-प्रेरणा से तथा महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन से इस क्षेत्र के श्रीहरि आश्रित कोरोना में अक्षरनिवासी हुए। उनकी याद में महामंत्र धुन और कथा वार्ता गांधीनगर मंदिर के पूजारी देव स्वामी और कालुपुर मंदिर के धर्मकिशोरदासजी ने सभी को ''पर्व'' उत्सव की रुपरेखा का समझाये थे । (कोठारीश्री आर.सी.टेक्निकल घाटलोडिया)

कोटेश्वर में पर्व के निमित्त वृक्षा रोपण

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से पूरे धर्मकुल के शुभ आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी वर्ष ''पर्व'' के उपलक्ष में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञानुसार श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर में महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से १०० वृक्षो

का रोपण महंत स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी और भीखुभाई दलसाणिया द्वारा किया गया था । इस अवसर पर कालुपुर, गांधीनगर, नारायणघाट से संत उपस्थित थे । (महेन्द्र भगत)

पीपलज में "पर्व" के उपलक्ष में धुन और सत्संग सभा का आयोजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से के साथ समस्त धर्मकुल के शुभ आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी वर्ष ''पर्व'' के उपलक्ष में प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से धुन और सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में स.गु. पी.पी. स्वामी, धर्मकिशोर स्वामी, सत्संगभूषण स्वामी, नरनरायण स्वामी आये थे । कथा वार्ता का लाभ दिये थे । (कोठारीश्री पीपलज)

"पर्व" के उपलक्ष में अरोडा से कालुपुर मंदिर तक पैदल यात्रा

विश्वका सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद के बीच विराजमान भरतखंड के राजाधिराज आराध्यदेव श्री नरनारायणदेव जिसका श्रीहरिने अपने बाथ में लेकर प्रतिष्ठा किये है । श्री नरनारायणदेव ''पर्व'' उत्सव के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-एवम् आशीर्वाद से तथा धोलका मंदिर के महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से ईडर देश के अरोडा गाँव में अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर तक ता. १६-७-२१ से ता. १८-७-२१ लगभग ७० लोगोने पदयात्रा किये थे । इस अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्रीने शुभ आशीर्वाद से सभी हरिभक्त लाभान्वित हुए ।(कोठारीश्री अरोडा-ईडर देश)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (सराचोकडी) "पर्व" के उपलक्ष में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (सरा चोकडी) श्रीजी स्वामी तथा शा. स्वा. धर्मवल्लभदासजी के प्रेरणा से परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान के २०० वे पाटोत्सव महामहोत्सव ''पर्व'' के उपलक्ष में प्रति शनिवार सत्संग का सुंदर आयोजन किया गया था । जिस में उत्सव की सभी रुपरेखा संतो द्वारा समझाया गया ।(अनिल दूधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (श्रीहरिकृष्णधाम) रणजीतधाम

परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा यहाँ के स्वामी भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से ता. ११-७-२१ के दिन अच्छी सत्संग सभा की गई । जिस में परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान के २०० वे पाटोत्सव महामहोत्सव ''पर्व'' के उपलक्ष में गाँव गाँव में घुम कर तन, मन धन से जुडने के लिये प्रेरित किये । संतोने श्री नरनारायण भगवान के महिमा को समझाये थे ।(कोठारीश्री रणजीतगढ)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा (सीता दरवाजा) वार्षिक पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर (सीता दरवाजा) ध्रांगध्रा में बिराजमान सर्वोपरि भगवान श्रीहरि का १५७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लास से मनाया गया । इस अवसर पर मूली मंदिर के स.गु. स्वामी भक्तिहरिदासजी और स्वामी धर्मजीवनदासजी आकार सभी भक्तो के देव आचार्यश्री की महिमा के साथ परमकृपालु श्री नरनारायण भगवान के २०० वर्ष के ''पर्व'' महामहोत्सव में सभी हरिभक्त तन, मन, धन से जुडने के लिये प्रेरित किये । यहाँ के रुषि स्वामी ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाकर आरती किये थे । सरकार के निर्देशानुसार सभी आयोजन को पूर्ण किया गया था ।(अनिलभाई)

बावला : श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला के महंत पद पर स.गु. शास्त्री स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी घनश्यामजीवनदासजी (बिलियावाले) की नियुक्ति की गई है।

कांकरीया रामबाग अहमदाबाद : श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत पद पर स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजी गु. स.गु. ब्रह्मचारी गवैया स्वामी रामकृष्णानंदजी की नियुक्ति की गई है।

अंजली (वासणा) : श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला के महंत पद पर स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी गुरु स.गु. स्वामी उत्तमप्रियादसजी की नियुक्ति की गई है।

दिल्ली : श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला के महंत पद पर स्वामी योगीचरणदासजी की नियुक्ति की गई है।

संवत २०७७-७८ के वर्ष में वर्षा काल के समय गाँवो में (देश) कथा करने गये संतो की सूची

देश का नाम	मंडलधारी का नाम
पोर-वावोल	स्वामी जयप्रकाशदासजी गुरु स्वामी हरिकृष्णदासजी (कालुपुर)
धमासणा	स्वामी जयप्रकाशदासजी गुरु स्वामी हरिकृष्णदासजी (कालुपुर)
अहमदाबाद शहर चौरासी	शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी गुरु स्वामी देवकृष्णदासजी (गांधीनगर)
कणभा	शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी गुरु स.गु. स्वामी केशवचरणदासजी (कच्छी)
बालासिनोर	स.गु. शास्त्री स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी गुरु स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी (कालुपुर)
आंतरोली	स्वामी धर्मस्वरुपदासजी गुरु स्वामी जानकीवल्लदासजी (बापुनगर)
लुणावाडा	स्वामी नारायणमुनिदासजी गुरु स्वामी मुकुंदजीवनदासजी
मारुसणा-कटोसणा	स्वामी सत्यसंकल्पदासजी गुरु स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (धोलका)
ट्रेन्ट सीतापुर	शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर)
विसनगर	शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी गुरु स्वामी हरिसेवादासजी (वडनगर)
खारवरिया	स.गु. शास्त्री स्वामी बालकृष्णदासजी (जयदेवपुरा)
प्रांतिज-मोडासा	शास्त्री स्वामी अखिलेश्वरदासजी गुरु स्वामी देवप्रसाददासजी (अयोध्या)
कपडवंज	स.गु. स्वामी घनश्यामस्वरुपदासजी गुरु स्वामी आनंदप्रसाददासजी (कालुपुर)
साणंद-गोधावी	स्वामी धर्मकिशोरदासजी गुरु शास्त्री स्वामी जगतप्रकाशदासजी (कालुपुर)
शिरोही	स.गु. शास्त्री स्वामी गुरुप्रसाददासजी गुरु शास्त्री स्वामी हरिगोविंददासजी (कालुपुर)
विहार गेरता	स.गु. शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी गुरु स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी (कालुपुर)
वडु-डांगरवा	स.गु. स्वामी ध्यानप्रियदासजी गुरु ध्यानी स्वामी (बोपल)
बालवा	स.गु. स्वामी घनश्यामस्वरुपदासजी गुरु स्वामी केशवचरणदासजी (कच्छी)
भात कासिंद्रा	स्वामी रंगदासजी गुरु स्वामी हरिनारायणदासजी (अहमदाबाद)
नलकांठा	शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी गुरु स.गु. स्वामी केशवचरणदासजी (जेतलपुर)
कुंडाल-राजपुर	स्वामी रंगदासजी गुरु स्वामी हरिनारायणदासजी (अहमदाबाद)
लांघणज	स्वामी हरिप्रकाशदाजी गुरु स्वामी नारायणमुनिदासजी (अहमदाबाद)
मोरवासण	स.गु. शास्त्री स्वामी धर्मप्रवर्तकदासजी गुरु ध्यानी स्वामी (पेथापुर)
संतरामपुर	शास्त्री स्वामी विश्वस्वरुपदासजी गुरु भंडारी स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी (अहमदाबाद)
उंझा	स्वामी भक्तिनंदनदासजी गुरु स्वामी प्रेमवल्लभदासजी (अहमदाबाद)

अक्षरवास : कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पार्षद रमेश भगत गुरु स.गु. शा. स्वामी केशवचरणदासजी (बालाशिनोर मंदिर में सेवा पूजा देते) ता. १०-७-२०२१ के दिन श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

जेठ सुद-१ प.भ. नाथीबा भगत (अंबापुर) । **जेठ सुद-३** अ.नि. स्वामी भक्तिप्रसाददासजी (गढपुर, प.भ. चंदुभाई सोमदास डेरीवाले (अहमदाबाद), अ.नि. शकुन्तलाबेन हेमाभाई पटेल (नरोडा), प.भ. हेतलबेन अमितभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हर्षदभाई प्रभुभाई (अहमदाबाद), प.भ. रसिकभाई शंकरदास (आनंदपुरा), प.भ. भाईलालभाई शामजीभाई (धरमपुर) । **जेठ सुद-५** अ.नि.प.भ. विठ्ठलदास प्रेमचंददास भावसार (अहमदाबाद), प.भ. डॉ. रोशनी खीमाणी (दहींसरा-कच्छ) । **जेठ सुद-६** न्यालकरण ईन्फ्रा (अहमदाबाद), प.भ. दवे नीताबेन नवनीतभाई मोरबी, अ.नि.प.भ. घनश्यामभाई लालजीभाई खोखरिया (अहमदाबाद) । **जेठ सुद-७** अ.नि.प.भ. अंबाबेन गांडालाल पटेल (मोखासण) । **जेठ सुद-८** प.भ. पटेल जागृतीबेन कमलेशभाई (बायड), प.भ. पटेल कलसीबेन केतनभाई (अहमदाबाद), प.भ. पटेल खुश विजयभाई (धमासणा), अ.नि.प.भ. शांताबेन मनुभाई वाटलिया (अहमदाबाद), प.भ. अरजण रामजी केराई (रामपर वेकरा-कच्छ), प.भ. रमेशभाई मूलजीभाई भीमजीभाई हिराणी (सुखपर-कच्छ), अ.नि.प.भ. अमरबाई वेलजी भंडेरी (सुखपर-कच्छ), अ.नि.प.भ. नारणभाई गोरलिया (कच्छ) । **जेठ सुद-९** अ.नि.प.भ. कलाबेन रमणलाल पटेल (पलियड), प.भ. गोरसिया नानजीभाई (कच्छ) । **जेठ सुद-१०** अ.नि.प.भ. अमृतभाई रणछोडभाई पटेल (अंबापुर), सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सां. उषाबा (अहमदाबाद), प.भ. हरिकृष्ण नाथालाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रमणभाई शामलभाई पटेल (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. सुभद्राबेन हरिभाई भावसार (अहमदाबाद) । **जेठ सुद-११** (फराल) अ.नि.प.भ. माणेकलाल विठ्ठलदास भावसार (सरसपुर) । **जेठ सुद-१२** प.भ. पटेल कनुभाई भोगीलाल (अहमदाबाद), प.भ. पटेल बृदांलीबेन मितुलभाई (अडमदाबाद), अ.नि.प.भ. पटेल सचिनकुमार कनैयालाल (खरणा), अ.नि.प.भ. नरेन्द्रसिंह जगदीशभाई सिंधव (बलोल-भाल), प.भ. पटेल काशीबेन केशवभाई (उनावा), प.भ. सविताबेन लालजीभाई (खाखरिया), प.भ. पटेल अनिल गोविंदभाई कुबेरदास प्रभुदास (विहार), प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर), प.भ. चौधरी गोपालभाई जेशंगभाई (बालवा), फूल मंडली की बेन (हवेली कालुपुर), प.भ. प्रभुभाई राजाभाई सोलंकी (वणी), अ.नि.प.भ. मधुबेन ईश्वरभाई पटेल (बापुनगर), प.भ. पटेल विठ्ठलभाई एस. । **जेठ सुद-१३/१४** अ.नि.प.भ. अमृतभाई बापुभाई गोबरभाई चौधरी (बालवा) ।

जेठ वद-१ प.भ. देवेन्द्रभाई (मुंबई), अ.नि.प.भ. भक्तिबेन बलवंतभाई सोनी (राणीप) । **जेठ वद-२** प.भ. पुष्पाबेन गीरीशचंद्र श्रीवास्तव (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. बालबाईबेन कानजीभाई वेकरिया (सुखपर-कच्छ), प.भ. मनसुखभाई जागाणी (राजकोट), अ.नि. सांख्ययोगी रामबाई रुडा (माधापर-कच्छ), अ.नि.प.भ. वीरबाई लालजी कानजी (मांडवी-कच्छ), अ.नि.प.भ. भीमजी करशन हिराणी (माडंवी-कच्छ), अ.नि.प.भ. बालबाई कानजी जीणा केराई (नारायणपर-कच्छ), अ.नि.प.भ. धनजी लालजी वाधजीयाणी (गोडपर-कच्छ) । **जेठ वद-३** प.भ. ठक्कर लक्ष्मीचंदभाई मगनलाल (अहमदाबाद), प.भ. चौधरी दशरथभाई शीवाभाई (बालवा), प.भ. वकील भरतभाई प्रभुलाल (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. कानजीभाई देवसीभाई भूडिया (कोटडी-कच्छ), प.भ. पटेल रविन्द्र जीवाभाई (नरोडा), प.भ. पटेल महेन्द्र हाथीभाई (सोजा), अ.नि.प.भ. केशवलाल अंबालाल पटेल (अंबापुर) । **जेठ वद-४** प.भ. करशनभाई कानजीभाई राधवाणी (अहमदाबाद), प.भ. लालजी करशन आसाणी (भूज-कच्छ), प.भ. ध्रुविन शिगाणा और अंकित टींबाडीया (निकोल), प.भ. नित्य सागरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. धनुबेन शिजी जेसाणी (बलदिया-कच्छ) । **जेठ वद-५** प.भ. लीलाबेन के. टेल (अहमदाबाद), प.भ. पटेल महेशभाई डाह्याभाई (पोर), प.भ. जसवंतभाई फूलाभाई पटेल (मोटेरा) । **जेठ वद-६** प.भ. पटेल सविताबेन चंदुलाल (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. प्रवीणचंद्र चिमनलाल पंड्या (साबरमती), अ.नि.प.भ. फकीरभाई चोटाभाई पटेल (कपडवंज) । **जेठ वद-७** प.भ. प्रेमबाई विश्रामभाई डबासिया (मिरजापुर-कच्छ), कष्टभंजन के खुशी हेतु स.गु. स्वामी नौतमप्रकाशदासजी (रडोदरा) । **जेठ वद-८** प.भ. अरविंदभाई नारणभाई पटेल (धमासणा), अ.नि.प.भ. कांतिलाल सवजीभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. रमेशभाई छगनभाई पटेल (सुरत), अ.नि.प.भ. नर्मदाबेन जगदीशभाई पटेल (कंडारी) । **जेठ वद-९** प.भ. डाभी प्रवीणजी रजुजी (डांगरवा), प.भ. केराई रिकीन दिनेशभाई (कच्छ) । **जेठ वद-१०** प.भ. पटेल कमलेशकुमार देवाभाई (नरोडा), प.भ. जय जशवंतभाई गोवाणी (अहमदाबाद), अ.नि.प.भ. विठ्ठलभाई नारणभाई पटेल (चांदखेडा), अ.नि.प.भ. शांताबेन फूलाभाई वेकरिया (खोडी), प.भ. पटेल मुकेशभाई रामचंद्रभाई (नारणपुरा), अ.नि. स.गु. शा. स्वा. देवचरणदासजी (कालुपुर) । **जेठ वद-११** (फराल) अ.नि.प.भ. धनलक्ष्मीबेन माणेकलाल भावसार (सरसपुर) । **जेठ वद-१२** प.भ. शंकरभाई फूलाभाई पटेल (मोटेरा), प.भ. पटेल घनश्यामभाई मूलचंददास (डांगरवा), प.भ. पटेल रमेशभाई अम्बालाल (सारसा), प.भ. हिंगु नरेन्द्रभाई खीमजीभाई (नरोडा), अ.नि.प.भ. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. पटेल जयंतीभाई मफतलाल (झुंडाल), अ.नि. प.भ. राजेन्द्रप्रसाद रमणलाल जोशी (अहमदाबाद), प.भ. रमेशभाई वालजीभाई काथरोटिया (निकोल), प.भ. देवजीभाई वशरामभाई पटेल (अमरेली), प.भ. नर्मदाबेन खीमजीभाई पटेल (मोरबी) । **जेठ वद-१३** प.भ. विक्रमभाई तथा विपीनभाई (गांधीनगर), श्री स्वामिनारायण मंदिर (कुंडल) । **जेठ वद-१४** प.भ. विक्रमभाई विपीनभाई (गांधीनगर), अ.नि.प.भ. वल्लभभाई राजाभाई मांडलीया (धांडला), प.भ. पटेल मिली कीरीटभाई (झुंडाल) । **जेठ वद-३०** अ.नि.प.भ. विश्रामभाई शामजीभाई वरसाणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. दोशी पूर्णिमाबेन सिद्धार्थभाई (पोरबंदर), अ.नि.प.भ. राधाबाई शीवजी केराई (सुखपर-कच्छ), प.भ. अमरशीभाई राधवजीभाई परमार (राजकोट), प.भ. पीड मौलिकभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. बाबुभाई नारणभाई (मारुसणा)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

रीलीफ रोड तरफ से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर आने वाले रोड पर नये दरवाजे का उद्घाटन प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा हुआ । उस समय स्थानिक राजकीय लोग उपस्थित रहे थे।

लुणावाडा गाँव प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में सत्संग सभा

पर्व उत्सव के उपक्रम में अनेक गाँवो में सत्संग प्रवृत्ति

बालवा - वृक्षारोपण

शीलज - किट वितरण

शेरगाम - धुन

धारीयावद - सुंदरकांड

महेसाणा सत्संग सभा

पेथलपुर - २०० बोरसली के वृक्षारोपण

गामडी - सत्संग सभा

धीणोज - सत्संग सभा

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

प.पू. लालजी महाराजश्री का २५ वाँ प्राकट्योत्सव

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये ऑनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की आधिकारिक वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।

http://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharsani